सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

मोहन और खोया हुआ खिलौना

एक छोटे से गाँव में मोहन नाम का नन्हा लड़का रहता था. मोहन बहुत ही चंचल, खुशमिजाज और उत्साही था, लेकिन कभी-कभी वह छोटी-छोटी परेशानियों से बचने के लिए झूठ बोलने की आदत भी बना लेता. मोहन के पास बहुत सारे खिलौने थे, लेकिन उसका सबसे प्यारा खिलौना एक लाल रंग का छोटा ट्रक था, जिसे उसने अपने जन्मदिन पर अपने दादा जी से मिला

था. वह ट्रक मोहन के लिए सिर्फ एक खिलौना नहीं था, बल्कि उसके लिए खास यादों और प्यार का प्रतीक भी था.

एक धूप भरी दोपहर मोहन अपने दोस्तों के साथ गाँव के पास वाली बगीचे में खेल रहा था. वहाँ बड़े-बड़े पेड़ और रंग-बिरंगे फूल थे. बच्चे अपनी हँसी और खुशी के बीच दौड़ते-भागते हुए खेल रहे थे. मोहन अपने लाल ट्रक को घुमाते हुए दौड़ रहा था, लेकिन अचानक ट्रक उसके हाथ से फिसल गया और झाड़ियों के बीच चला गया. मोहन ने देखा कि उसका सबसे प्यारा खिलौना कहीं गायब हो गया है. उसका दिल डर और चिंता से भर गया. मोहन ने चारों तरफ देखा, लेकिन ट्रक कहीं दिखाई नहीं दिया. वह धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा. रास्ते में उसका मन बहुत परेशान था. उसने सोचा, 'अगर मैं घर जाकर बताऊँ कि मेरा ट्रक खो गया, तो माँ मुझे डांट देंगी. शायद कोई उसे ढूँढकर वापस ले आएगा.' मोहन ने डर और शर्म की वजह से सच बोलने से मना कर दिया. अगले दिन मोहन अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था. तभी उसने देखा कि गाँव का छोटा बच्चा रामू उसके लाल ट्रक के साथ खेल रहा है. मोहन का दिल बहुत भारी हो गया. उसने देखा कि रामू खुश है और ट्रक का आनंद ले रहा है.

मोहन ने सोचा, 'अगर मैं उसे बिना कुछ कहे ट्रक ले लूँ तो रामू दुखी हो जाएगा, और अगर मैं झूठ बोलूँ तो मेरी गलती छुप जाएगी.' मोहन घर आया और अपनी माँ के पास बैठ गया. उसकी आँखों में डर और शर्म दोनों झलक रहे थे. उसने धीरे-धीरे पूरी बात बताई. मोहन की माँ ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मोहन, सच बोलना हमेशा सही होता है. डर और झूठ सिर्फ समस्याएँ बढ़ाते हैं. चलो अब हम रामू से जाकर ट्रक वापस माँगते हैं.' मोहन ने माँ के साथ रामू के पास जाने का निर्णय लिया. रास्ते में माँ ने मोहन से कहा, 'देखो बेटा, ईमानदारी और सच्चाई हमेशा सबसे मजबूत हथियार होती हैं. कभी मत डरना कि सच बोलने से कोई नाराज होगा. अगर हम सही ढंग से बात करेंगे, तो लोग हमेशा समझेंगे.' मोहन ने गहरी साँस ली और खुद को तैयार किया. रामू के पास पहुँचकर मोहन ने प्यार और नम्रता से कहा, 'रामू, यह मेरा प्यारा ट्रक है. गलती से यह तुम्हारे पास आ गया, कृपया मुझे वापस दे दो.'

रामू ने मुस्कुराते हुए ट्रक मोहन को लौटा दिया और बोला, 'कोई बात नहीं मोहन, मैं भी बस खेल रहा था. मैं खुश हूँ कि ट्रक तुम्हारे पास वापस आ गया.' मोहन ने अपने लाल ट्रक को फिर से हाथ में लिया और बहुत खुश हुआ. उसने धन्यवाद कहा और घर लौटते समय अपने दिल में यह ठान लिया कि अब वह किसी भी परिस्थिति में झूठ नहीं बोलेगा. उसने सीखा कि सच्चाई और ईमानदारी हमेशा सही रास्ता दिखाती हैं, चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न हो. मोहन की यह घटना उसके गाँव में भी चर्चा का विषय बन गई. गाँव के लोग और उसके दोस्त उसके साहस और ईमानदारी की तारीफ करने लगे. मोहन ने महसूस किया कि एक छोटी-सी गलती को छुपाने के बजाय सच बोलना न केवल दिल को हल्का करता है, बल्कि दूसरों के साथ विश्वास और प्यार भी बढ़ाता है.

कुछ दिनों बाद मोहन अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था. उसने देखा कि रामू भी खेल में शामिल हो गया. मोहन ने रामू से कहा, 'अब हम हमेशा साथ में खेलेंगे, लेकिन अगर कोई चीज खो जाए तो सच-सच बता देंगे.' रामू मुस्कुराया और दोनों दोस्त फिर से खुशी-खुशी खेलने लगे. मोहन ने उस दिन यह भी जाना कि झूठ बोलकर केवल मुश्किलें बढ़ती हैं, लेकिन सच्चाई और ईमानदारी जीवन में हमेशा सम्मान, प्यार और भरोसा लाती हैं. मोहन अब न केवल अपने खिलौनों की कीमत समझने लगा था, बल्कि दोस्ती, परिवार और ईमानदारी की अहमियत भी समझ गया. और इस तरह मोहन की कहानी से बच्चों को यह सीख मिली कि सच्चाई और ईमानदारी ही सबसे बड़ी ताकत है. चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न हो, सच बोलना हमेशा सही रास्ता दिखाता है.

सीख

'सच्चाई और ईमानदारी हमेशा सही रास्ता दिखाते हैं. झूठ और डर सिर्फ मुश्किलें बढ़ाते हैं. विश्वास और प्यार सच्चाई में ही पनपते हैं.'

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

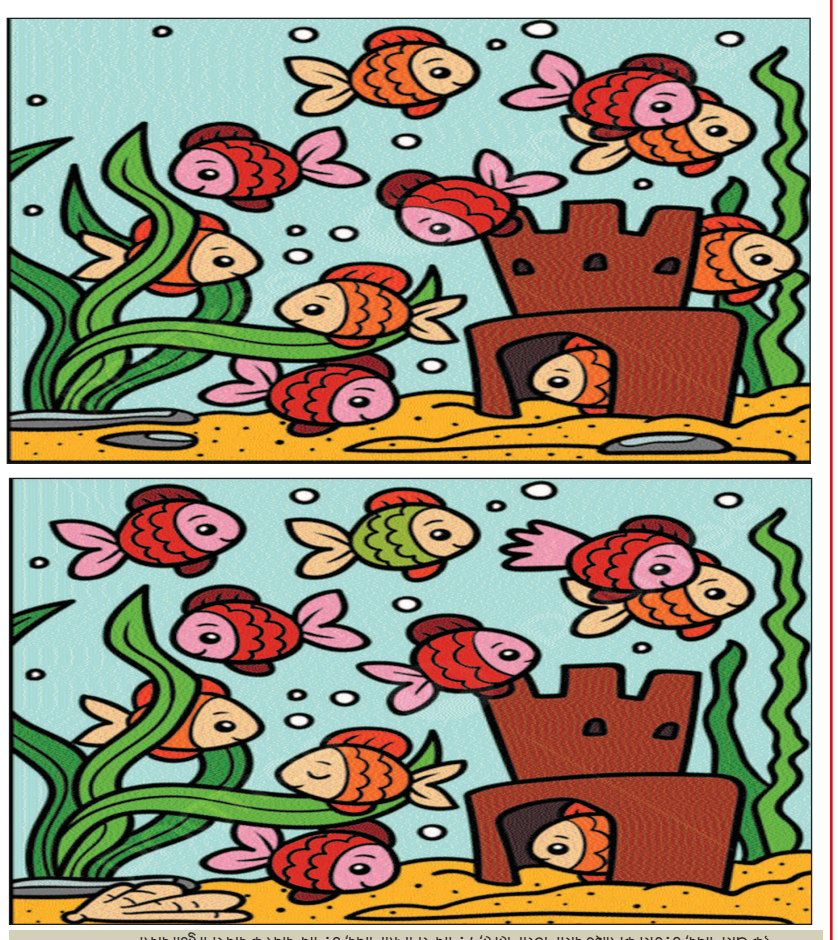

उत्तर :- 1. ऊपर से एक मछली गायब, 2. दूसरी मछली का कलर अलग, 3. मछली के पंख की डिजाइन अलग, 4. मछली की आंख बंद, 5. टीले का एक खोल गायब, 6. टीले की साइड वाली मछली नहीं है, 7. नीचे लगी पत्ती गायब, 8. नीचे वायर के बीच लगा हुआ बाक्स

भूल भुलैया

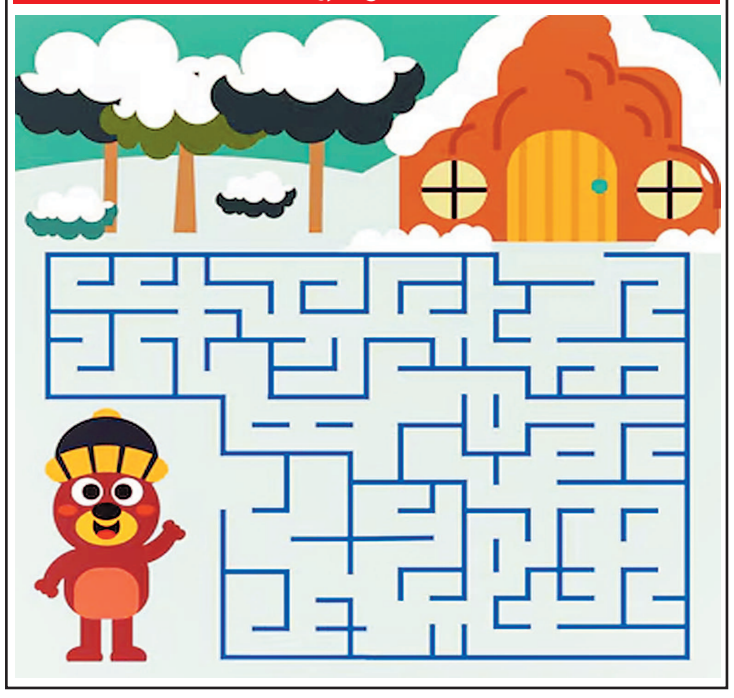

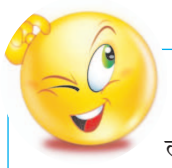

बूझो तो जानें

- हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़े थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी?
  जवाब- भुट्टा
- पहेली- सुबह-सुबह ही आता हूँ, दुनिया की खबर सुनाता हूँ, बिन मेरे उदास हो जाते, सबका प्यारा रहता हूँ.
  जवाब- अखबार
- पहेली- वह क्या है जिसे इस्तेमाल करने से पहले तोड़ना पड़ता है?
  जवाब- अंडा
- साल के किस महीने में 28 दिन होते हैं?
  जवाब- साल के सभी महीनों में 28 दिन होते हैं.
- काला रंग मेरी शान, सबको मैं देता हूँ ज्ञान, शिक्षक करते मुझे पर काम, नाम बताकर बनो महान.
  जवाब- ब्लैकबोर्ड
- 2 बेटे और 2 पिता फिल्म देखने गए, उनके पास 3 टिकट थे, फिर भी सबने फिल्म देखी, कैसे?
  जवाब- क्योंकि वे 3 लोग ही थे, दादाजी, पिताजी और बेटा
- वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है?
  जवाब- कोयला
- प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन?
  जवाब-बंदर
- दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए.
  जवाब- जूते
- एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.
  जवाब- आकाश और तार

जानकारी

सिन्थेसिस पौधों की जादुई रसोई

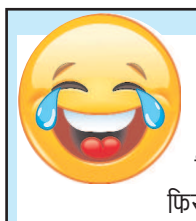

प्रकाश संश्लेषण (फोटो-सिन्थेसिस) पौधों की एक अद्भुत और जादुई प्रक्रिया है, जिसमें वे अपना खाना खुद बनाते हैं. पौधों की पत्तियाँ उनकी खास रसोई की तरह काम करती हैं, जहाँ भोजन तैयार होता है. सबसे पहले पौधे अपनी जड़ों से मिट्टी में मौजूद पानी खींचते हैं और उसे तने के ज़रिये पत्तियों तक पहुँचाते हैं. इसके बाद पत्तियों पर मौजूद छोटे-छोटे छिद्र, जिन्हें स्टोमाटा कहा जाता है, हवा से सी-ओ-टू यानी कार्बन डाइऑक्साइड अंदर लेते हैं.

पत्तियों में मौजूद क्लोरोफिल, जो हरे रंग का पदार्थ है, सूरज की रोशनी को पकड़ लेता है और यही रोशनी पौधों के लिए ईंधन का काम करती है. जब पानी, सी-ओ-टू और सूरज की रोशनी पत्तियों में मिलते हैं, तो पौधे अपना भोजन बना लेते हैं जिसे ग्लूकोज़ कहते हैं. यह ग्लूकोज़ पौधे की ऊर्जा बनकर उसे बढ़ने, फूल और फल बनाने तथा स्वस्थ रहने में मदद करता है. इसके साथ-साथ पौधे इस प्रक्रिया के दौरान ऑक्सीजन भी बनाते हैं, जिसे वे हवा में छोड़ देते हैं और वही ऑक्सीजन हम सभी की साँसों के लिए सबसे जरूरी है.

इसी वजह से प्रकाश संश्लेषण न केवल पौधों के लिए, बल्कि पूरे पृथ्वी के जीवन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है. वास्तव में पौधे हमारी धरती के खामोश सुपरहीरो हैं, जो हर दिन हमारा जीवन सुरक्षित और बेहतर बनाते हैं.

तारों के मजेदार रोचक तथ्य

- तारे सूरज जैसे होते हैं, बहुत दूर होने की वजह से छोटे दिखते हैं.
- तारे टिमटिमाते हुए लगते हैं, लेकिन असल में वे लगातार चमकते हैं.
- तारे गैसों से बने होते हैं, खासकर हाइड्रोजन और हीलियम से.
- ब्रह्मांड में तारों की संख्या रेत के कणों से भी ज्यादा है.
- तारे भी जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, वे नेबुला नाम के बादलों से जन्मते हैं.
- बहुत बड़ा तारा मरते वक्त सुपरनोवा बनकर जोरदार धमाके से फटता है.
- कुछ तारे जोड़े में रहते हैं, जिन्हें 'बाइनरी स्टार' कहा जाता है.
- सबसे चमकीला तारा 'डॉग स्टार' है.
- तारों की रोशनी हम तक पहुँचने में कई साल लग जाते हैं इसे 'लाइट ईयर' कहते हैं.

कविता

इंद्रधनुष

बारिश रुके,
सूरज निकले,
दिखे अचानक
रंगों के धागे.
लाल, पीला, हरा
और नीला,
जैसे कोई रंगों का
झमेला.
सात रंगों की
शान निराली,
जैसे हो कोई जादू
की थाली.
सबको अपनी
ओर बुलाए,
इंद्रधनुष मन
खूब भाए.

हंसी-ठिठोली

- वो क्या चीज़ है, जिसमें छेद ही छेद हैं, फिर भी पानी रोक लेती है?
  उत्तर : स्पंज
- ऐसा कौन-सा कमरा है, जिसमें न दरवाज़ा होता है, न खिड़की?
  उत्तर : मशरूम
- वो क्या है, जो जितना निकाला जाए, उतना ही बड़ा होता जाता है?
  उत्तर : गड्ढा
- ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो बोल भी सकती है, पर आवाज़ कभी नहीं निकलती?
  उत्तर : मोबाइल चैट/मैसेज
- मैं पंख भी नहीं हूँ, पर हवा में उड़ता हूँ. बताओ मैं कौन?
  उत्तर : गुब्बारा
- ऐसी कौन सी चीज़ है, जिसे उठाना आसान है, पर फेंकना बेहद मुश्किल?
  उत्तर : पंख
- वो क्या है, जो खरीदते भी हो तुम, और बेकार होने पर बेच भी देते हो?
  उत्तर : अख़बार
- वो क्या चीज़ है, जो आपके पास है, लेकिन दूसरे लोग ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं?
  उत्तर : आपका 'नाम'
- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो रात को आती है पर अंधेरा नहीं करती?
  उत्तर : सपना

प्रेरक प्रसंग

हिंदी साहित्य के अमर कवि हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन, जिन्हें उनके करीबी लोग प्यार से 'बच्चन जी' कहते थे, हिंदी साहित्य के महान कवि और लेखक थे. उनका जन्म 27 नवंबर 1907 को प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ. उन्होंने अपने जीवन में जिस तरह की ईमानदारी, संघर्ष और साहित्य के प्रति समर्पण दिखाया, वह आज भी लाखों पाठकों और कवि युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है. हरिवंश राय बच्चन ने अपने साहित्यिक सफर की शुरुआत बहुत ही सरल और उत्साही मनोवृत्ति से की. उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से साहित्य में शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद शिक्षक के रूप में भी काम किया. लेकिन उनका असली आकर्षण कविता और लेखन था.

उनकी कविताओं में जीवन के सुख-दुख, प्रेम, प्रेरणा और समाज की विसंगतियों का बेहतरीन चित्रण मिलता है. उनकी सबसे चर्चित कृति 'मधुशाला' है, जो 1935 में प्रकाशित हुई. यह पुस्तक हिंदी कविता का एक ऐसा अमूल्य खजाना बन गई, जिसने उन्हें रातोंरात प्रसिद्धि दिलाई. मधुशाला में हरिवंश राय ने शराब की प्रतीकात्मकता के माध्यम से जीवन, प्रेम और मानव मन की जटिलताओं को सरल और सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया. इसके अलावा उन्होंने 'मधुबाला', 'मधुमान', 'मेरा जीवन', और 'नीड़' जैसी कई अन्य पुस्तकें भी लिखीं. हरिवंश राय बच्चन का लेखन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि वह पाठकों को जीवन में उत्साह, प्रेम और संघर्ष की प्रेरणा भी देता था. उनका लेखन अत्यंत सरल, मार्मिक और भावपूर्ण था, जिसे आम आदमी भी आसानी से समझ सकता था.

वे कवि होने के साथ-साथ एक महान शिक्षक और प्रेरक वक्ता भी थे. उनकी प्रेरणा का स्रोत हमेशा सादगी, कर्तव्यनिष्ठा और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहा. उनका कहना था कि 'साहित्य का उद्देश्य केवल सुंदर लिखना नहीं, बल्कि पाठक के जीवन में कुछ मूल्य और संदेश छोड़नड्डा भी है. 'हरिवंश राय बच्चन का योगदान हिंदी साहित्य में अमूल्य है. उनका लेखन आज भी स्कूलों, कॉलेजों और साहित्यिक मंचों में पढ़ाया और सराहा जाता है. उनका जीवन, उनके विचार और उनके शब्द हमें यह सिखाते हैं कि सच्चा साहित्य वही है जो दिल से लिखा जाए और जीवन को प्रेरित करे. हरिवंश राय बच्चन का निधन 18 जनवरी 2003 को हुआ, लेकिन उनकी कविताएँ और उनकी शिक्षाएँ आज भी लोगों के हृदय में जीवित हैं. वे न केवल एक महान कवि थे, बल्कि जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और प्रेरणा का प्रतीक भी थे.

बिंदु मिलाओ

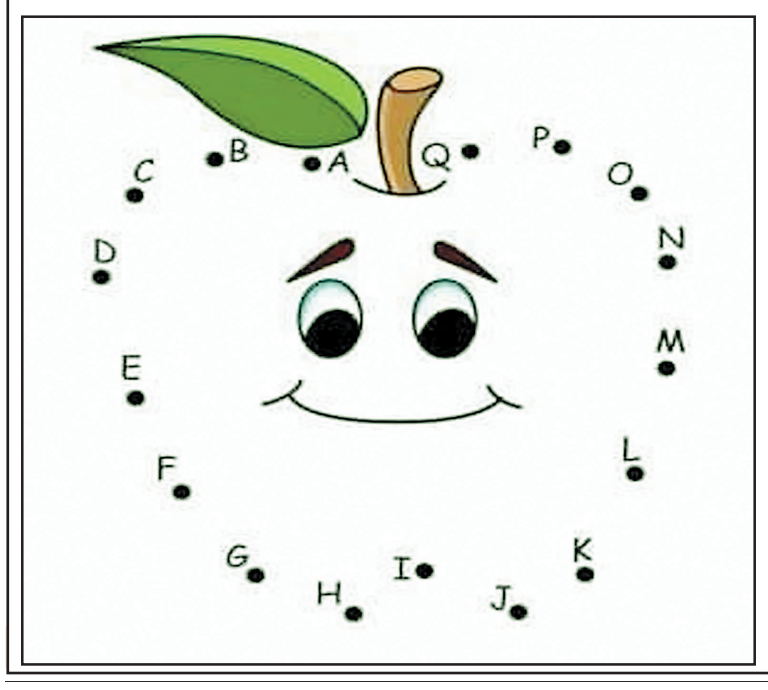

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**